The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वैदिक वाङ्मय में जल विमर्श

पुष्पाली बैरागी

शोधछात्रा, नेट/स्लेट, कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय

E-mail id - puspalibairagi@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16873814

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

जल, जीवन, पर्यावरण, भारतीय संस्कृति, वेद ।

ABSTRACT

जल जीवन के मुख्य आधार, जीवन के प्रमुख तत्त्व है। जीने के लिए जीवों को जल की आवश्यकता है। जल के विना जीवन सम्भव नहीं है। आज विज्ञान और प्रयुक्ति के द्रुत विकास के दौरान बढती हुई औद्योगिक विकास और जनसंख्या के कारण पुरे विश्व में जल के प्रयोजन/मांग दिन व दिन बढती ही जा रही है। गोलकीय उत्ताप और बढती मात्रा के जनसंख्या ने पुरे विश्व में जल के उपलब्धता को निश्चित रूप से प्रभावित किया है। इसीलिए अपने जीवन रक्षा के स्वार्थ में जल के विषय में विशदरूप से अध्ययन करके इसके विविध दिशाओं को अच्छे से झाँक कर देख कर जल के संरक्षण और संवर्धन के लिए कोशिश करना बेहद जरुरी हो गया है। आदिग्रन्थ वेद में जल, पृथिवी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि उपादानों के प्रति बेहद श्रद्धा प्रदर्शित किया गया है। वैदिक ग्रन्थों में अनेक सन्दर्भ में जल के महत्व के उपर पर्याप्त प्रकाश हमारे नजर आते है। यहा जल के गुणागुण, संरक्षण और सर्वाङ्गीन महत्व के ऊपर ज्यादा जोर दिया गया है। ब्राह्मण, उपनिषद, स्मृति, पुराणादि शास्त्रों में भी सृष्टि के उत्पत्ति से पहले जल की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने जगत कि सृष्टि करते हुए पहले जल का निर्माण किया। शतपथ ब्राह्मण में भी उल्लेख किया गया है कि जल को हम जगत के सभी सृष्टियों में पहली सृष्टि मान सकते है।[१] जीवन के पर्यायरूप में जल हमेशा से स्तुत होते आए है। पितृसत्तात्मक पुरुषप्रधान देश के रूप में ख्यात होते हुए भी मानव सभ्यता के इतिहास में भारत में मातृप्रधान सत्ता का कभी भी कमी महसूस नहीं हुई। ऋग्वेद में जल को जीव के जननी के रूप में दिखाया गया है।[२] अब क्योंकि जल सभी के अशुद्धिया को दूर करके शुद्ध करते है, इस वजह से यजुर्वेद में भी जल को जननी के रूप में माना गया है।[३]

वैदिक साहित्य में जल की महत्ता -

वेद में जल को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। यहाँ तक कि भिन्न जगह पर लगातार जल के महत्व प्रतिपादित किया गया है। अथर्ववेद में प्राप्त वर्णना के अनुसार सुबह शाम वन्दन करने के समय प्रतिदिन जल के प्रति यह प्रार्थना किया जाता है कि दिव्य जल हमें सुख शान्ति प्रदान करें और साथ ही साथ इसके द्वारा हि हमारे इष्ट की प्राप्ति हो।[४]

जल सुखी और समृद्ध जीवन के आधार है। शतपथ ब्राह्मण में "आपो वै प्राण:" ऐसे बोलकर जल को प्राणीओं के प्राण कहा गया है। जल के सहजलभ्यता के लिए प्रभु के द्वारा किया गया उपकार को स्मरण करके ऋषि बोल रहें है कि द्युलोक के मुख्य देवता है सूर्य। सूर्य अपने आलोक से पूरे संसार को प्रकाशित करते है। इस आलोक के कारण ही हम आखों से देखते है।

हम सब जानते है कि मनुष्यों के शरीर पृथ्वी,अप,तेज,वायु और आकाश - इन पाँच तत्त्वों से बनता है और इन्हीं पाचों तत्वों से जुडे हुए है गन्ध,स्वाद,रूप,स्पर्श और ध्वनि शीर्षक ये पाँच संवेदना। ये पाँच तत्त्व एक दूसरे के पूरक है। इनके आपस में जुडने के कारण ही इस जगत का निर्माण हुआ है। उल्लेखनीय है कि हम जीवश्रेष्ठ मनुष्यलोग इन प्राकृतिक तत्त्वों के विवेकपूर्ण सही इस्तेमाल करेंगे तो हमारे चारों ओर एक अनुकुलता देखने को मिलेगा। इसके अलावा पर्यावरण के गलत इस्तेमाल करनेवाले लोग बस हमेशा मानवजीवन के लिए मुश्किलें खडा कर देते है। फिर ये भी ध्यान देने योग्य है कि पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश - इन पाँचों तत्त्वों में भगवान विद्यमान है। अत: लोग भिन्न तत्त्वों के रूप में भगवान को पूजते है और साथ ही में उनके दिव्य आशीर्वाद को प्राप्त करते है।

उपर दिए गए इन पाँचों तत्त्वों में जल एक अन्यतम तथा प्रधान तत्त्व है। जल ही जीवों का आधार है। जल के विना जीवन का कोई सार नहीं। ये एक ऐसी तत्त्व है जिसको श्रवणेन्द्रिय को छोडकर बाकी सभी इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकता है। जीवों के उत्पत्ति और पालन में जल के भूमिका के सन्दर्भ में ऋग्वेद में यह कहा गया है कि जब पर्जन्य देवता इस पूरे संसार को जल से रक्षा करते है, तब वर्षा के लिए हवा बहती है, आकाश में बिजली चमकते है, वनस्पति अंकुरित तथा विकसित होते है। अन्तरीक्ष से जल का नि:सरण होता है। इस जल के नि:सरण मात्र से ही समस्त प्राणीओं के लिए अन्न का उत्पन्न होता है और सभी क्षेत्रों में सुख का क्षरण होता है।[५]

हमारे भारतीय संस्कृति में दान का सर्वाधिक महत्त्व है। महाभारत में जल के महत्त्व के बारे में वर्णन करके जल दान को सर्वोत्तम दान माना गया है। क्योंकि जल जीवनप्रदायिनी क्षमता से युक्त है। केवल मनुष्य ही नहीं, संसार के सभी प्राणी जल के द्वारा अपने जीवन को प्राप्त करते है।[६] ऐसे भी कहा जा सकता है कि जल दान से प्राणी तृप्त होते है। जल में रहनेवाले दिव्यगुण के वजह से ही यह परलोक में भी लाभप्रद होते है।[७] हमारे संस्कृति में पहले से ही जल को अधिक महत्व दिए गए है। वेदादि प्राचीन तथा प्रामाणिक ग्रन्थों में जल को जीवन के आधार के रूप में विवेचन किया गया है और साथ ही इसके संरक्षण और संवर्धन पर भी विशेष नजर डाला गया है। ऋग्वेद में जल के महत्त्व के बारे में बोलकर ऋषि ने जलदेवता कि स्तुति कि है कि जैसे एक मा दुध पिलाकर अपने बच्चों कों पुष्ट करती है, ठीक उसी तरह अत्यन्त सुखकरी पोषक रस की सेवन कराकर जलदेवता हमें पुष्ट करें।[८]

जल के औषधीय गुणों का वैदिक वर्णन -

जल प्रकृति के द्वारा जीवजगत को प्रदान करनेवाला एक विशेष तोहफा है। ऋग्वेद में जल के गुणों के वर्णन में कहा गया है कि जल में अमृत है, जल में औषधी है।[९] अथर्ववेद के भी 'अपां भेषज' सूक्त में जल को जीवनीशक्ति, रोगनाशक तथा पुष्टिकारक आदि दैवीगुणों से युक्त कहा गया है। इसके अलावा भी प्राणीमात्र को सुख से तथा अन्न से पोषण करनेवाले जलदेवता के सान्निध्य पाने के लिए और सबके वृद्धि के लिए ऋषि प्रार्थना कर रहें है।[१०] बस रोग के उपशम के लिए ही नहीं, लम्बे समय तक जीने के लिए भी यहा जल की प्रार्थना की गई है।[११] ऋग्वेद के प्रथम मण्डल नवम सूक्त के प्रथम मन्त्र में जल को निरोगता, प्राणशक्ति तथा दृष्टिसक्ति के वर्धक के हिसाब से दिखाया गया है।[१२] यहाँ पर ऋषि यह भी कह रहे है कि निश्चितरूप से जल कल्याण का और निरोगता का कारक है। अर्थात जल के सही इस्तमाल से हम अपने शरीर को बिल्कुल स्वस्थ रख सकते है। जल औषधी गुण से भरपूर है। यह बार बार उल्लेख किया हि गया है कि जल के सही इस्तमाल से सभी तरह कि बीमारियों कि चिकित्सा सम्भव है। ऋषि कहते है कि उष्ण जल सेवन करना चाहिए। उष्ण जल के सेवन सभी रोगों को शान्त करते है।[१३]

जल केवल शरीर के रोगों को ही ठीक करता है ऐसी बात नहीं है, मानसीक रोगों के दूरीकरण में भी जल कि महिमा अपार है। ज्यादा क्रोधवाले लोगों को ठण्डा पानी पीने के लिए दिया जाता है क्योंकि जल केवल रोग को ही नहीं, साथ ही साथ क्रोध को भी क्षणभर में दूर कर सकते है। ऋग्वेद के इस मन्त्र पर ऋषि सभी के मन के द्वेष, द्रोह, हिंसा, क्रोध आदि को दूर करके मन कि शान्ति कामना किए है।[१४] वेद के कई स्थानों पर तो जल चिकित्सक के रूप में भी दिखाइ पडता है। यजुर्वेद के एक मन्त्र में ऋषि दुग्ध के रूप में सेवन किया हुआ जल शीघ्र हजम होने की और सेवन के बाद पेट में जल सुखकारी होने की प्रार्थना करते है। साथ ही यह भी कामना किए है कि ये जल राजरोग से रहित हो, सामान्य बाधाओं को दूरकरनेवाले हो, अपराधों को दूर करनेवाले हों और यज्ञ के लिए सहायकारी, अमृतस्वरूप तथा दिव्यगुणों से युक्त और स्वादयुक्त भी हो।[१५] बस इतना ही नहीं, जल के साथ साथ इसके शुद्धता व स्वच्छता भी बेहद जरूरी है। इसलिए अथर्ववेदीय 'पृथ्वीसूक्त' में जलतत्त्व का विचार करके इसके शुद्धता को मानवजीवन के लिए अत्यन्त जरूरी साबित किया गया है।[१६]

वेदों में जल प्रदूषण के प्रति सजग दृष्टिकोण -

पहले ही बताया गया है कि हमारे चारों तरफ रहनेवाले जीव-निर्जीव सभी को लेकर पृथ्वी, अप, तेज, वायु और आकाश आदि तत्त्वों को ही एकसाथ पर्यावरण कह सकते है। हमारे आस-पास रहनेवाले ये सभी तत्व एक दूसरे के पूरक है। एक को छोडकर दूसरे का कोइ मतलब नहीं। ध्यान देनेवाली बात यह है कि पृथ्वी कि ज्यादातर अंश जल से आवृत्त है। इस सम्पूर्ण संसार का जीने का आधार है जल। जल को छोडकर हम अपने जीवन कि कल्पना ही नहीं कर सकते। लेकिन दूख कि बात तो यह है कि प्रकृति का दिया हुआ एक ऐसी अमूल्य सम्पद को हम अपने सुविधा और स्वार्थ के लिए ऐसे इस्तमाल कर

रहें है कि कल तो बहत दूर की बात, आज ही यह एक चिन्ता का विषय हो गया है। हमारे काम काजों से ही आज समाज में प्रदूषण का मात्रा बढता गया है, जो कि जीवों के लिए नि:सन्देह ही गम्भीर समस्या खडा कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि हमारे वैदिक ऋषियाँ अपने आप में ही एक एक वैज्ञानिक थे। पर्यावरण के तत्त्वों के रक्षा के लिए और पूरे ब्रह्माण्ड के कल्याण के बारे में उनलोगों के द्वारा वेदों में अनेक चर्चा किया हुआ दिखने को मिलता है। यह भी ध्यान देनेवाली बात है कि हमारे जो वेद है ये केवल साहित्यों से परिपूर्ण एक ग्रन्थ मात्र नहीं है। वेदों के एक एक वाक्य गम्भीर तथा महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन काल में ही हमारे ऋषियों ने जल प्रदूषण के प्रति सजागता कि चिन्ता किए थे। यजुर्वेद में 'अन्तरिक्षं माँ हिन्सी' ऐसे कहकर जल प्रदूषण के प्रति जागरुकता प्रदर्शन किया गया है।

जल संकट तथा जल प्रदूषण से बचने के लिए जरूरी है कि हम जल को स्वच्छ रखें और जलसम्पदों के संरक्षण में ध्यान दें। उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद में मानवों को जागरूक करने के लिए कहा गया है कि द्युलोक, अन्तरीक्षलोक और भूलोक - इन तीनों लोको में उत्पन्न होनेवाले सृष्टि, जल आदि बार बार नहीं, बल्कि एकबार ही उत्पन्न होते है।[१७] यजुर्वेद में भी 'अन्तरिक्षं माँ हिन्सी' यह कहकर जल प्रदूषण के प्रति जागरूकता के बारे में चर्चा किया गया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में ऋषि हम मनुष्यों को जल के गुणों के बारे में कह रहे है। साथ ही ऋषि इन जलों के सही प्रयोग के बारे में बोले है। ऋषि सबको आह्वान कर रहे है कि हम जल के प्रसंशा और स्तुति के लिए हम सदा सचेतन रहे।[१८]

प्राचीन ग्रन्थों में जल संरक्षण की भावना एवं महत्व –

सभ्यता और संस्कृति के शुरुआत से ही हमारे देश में जल संरक्षण के उपर ध्यान दिया गया है। भारतीय विचार धारा के मुताबेक 'जलमेव जीवनम्' अर्थात् जल को ही जीवन के रूप में मान कर लगभग जल के सभी स्वरूपों का संरक्षण कि चर्चा किया आ रहा है। उल्लेखनीय है कि वैदिक साहित्य में जल को एक बेहद जरूरी तत्त्व के रूप में जाना जाता है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद से लेकर परवर्ती समय के बाकी तीन वेदों मे भी जगह जगह पर जल के महत्त्व तथा संरक्षण के विशेष उद्धरण मिलता है। यहा जलविषयक अनेक सूक्त तथा मन्त्र विद्यमान है। उदाहरण के तौर पे कह सकते है ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के एक मन्त्र में बोला गया है कि आकाश से मेघ के रूप में टपकनेवाले जल की राजा संरक्षण करें। इसके अलावा भी जमीन को खोदकर कुएँ से प्राप्त जल, पर्वत तथा भूमि से खुद बहा हुआ जल तथा नदी से समुद्र कि ओर बहनेवाला जलराशि के जल को संरक्षण करना चाहिए। बस इतना हि नहीं, उस उस जल को अच्छे से शोधन करके पीने लायक करके राजा राष्ट्र की रक्षा करें।[१९]

जल संकट के एक अन्यतम कारण है प्रदूषण। प्रदूषण के वजह से उपयोगी जल भी क्षणभर में ही व्यवहार के अनुपयोगी हो जाता है। अत: जल संरक्षण के उपर नजर डालकर यजुर्वेद में लोगो को जल के विविध स्रोतों के प्रति नुकसान न पहुचाने के लिए तथा उन सबको प्रदूषणमुक्त करने के लिए निर्देश दिया गया है, ताकि संसार के सभी प्राणी आराम से विना वाधा के जल को प्राप्त कर सकें।[२०] अथर्ववेद में वर्षा के जल को बेहद लाभकारी बोला गया है। यहा वर्षा जल का महत्त्व के बारे में बोलकर ऋषि कह रहें है कि वर्षाजल निश्चितरूप से अत्यन्त कल्याणकारी है।[२१] वास्तव में देखा जाए तो जल संरक्षण का

धारणा हमारे पूर्वजों के दिलों में प्राचीन काल से ही था। बाद में भिन्न तरीकों के द्वारा उस धारणा का विकास होने लगा। आज के समय में दीर्घकालीन विकास के लिए प्रकृति से मिले हुए जलराशि का किसी भी प्रकार से संरक्षण बेहद जरूरी है।

निष्कर्ष -

हमारे भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही जल को देवता के रूप में स्तुति किया गया है। लेकिन आज जल के स्तर दिन व दिन अधिक मात्रा में निम्न और प्रदूषित हो रहे है। लोगो के तबाही मचाने के कारण जललाभ के लगभग सभी प्राकृतिक स्रोत खतम ही होने लगी है। घर में हो चाहे बाहर जल की चाहत जितनी बढ रही है, जल मिलने की सम्भावना उतनी ही कम होती जा रही है। प्रकृति तो सदियों से ही नि:स्वार्थ भाव से हमें हमारी प्रयोजन की चीजें प्रदान करती आ रहीं है। लेकिन हममें से कई लोग अज्ञानता के कारण और कई लोग अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का दिया हुआ इन सम्पदों का शोषण तथा दोहन कर रहें है। इन्हीं सब के वजह से आज पुरे दुनिया के विविध स्थानों में खतरनाक जलसंकट दिखाई पडते है। आनेवाले समय में भी अगर हम सावधानी छोडकर जल का अपव्यय करेंगे तब तो इसका एक बेहद भयंकर परिस्थिति का हम खुद साक्षी बनेंगे।

यह भी उल्लेखनीय है कि हमारी भारतीयसंस्कृति त्याग के प्रतीक है। हमारे सम्पदों को हमें एसे इस्तेमाल करना चाहिए कि ये आज ही खतम न हो बल्कि बाद के पीढियों के लिए भी रह जाए। ईशोपनिषद् में भी बोला गया है कि इस संसार में स्थावर जंगम जितने भी चीजें है, उन सब में ईश्वर का अधिकार है। इन सभी को ईश्वर के द्वारा ही स्रजन किया गया है और ईश्वर ही इन सभी को नष्ट भी करेंगे। इसीलिए हमें हमारे सम्पदों को ऐसे इस्तमाल करना चाहिए की वो सब हमारे साथ ही साथ और दस लोगों के लिए भी उपलब्ध हो। हम ही इन सम्पदों को भोगनेवाले आखरी उपभोक्ता न बनें। यानि ऐसे कह सकते है कि त्यागभाव के साथ हमें हमारे सम्पदों का भोग करना चाहिए। ऐसे करेंगे तो बस हमारे समाज में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में शान्ति कि स्थापना होगी।[२२]

संदर्भ-सूची

- श.ब्रा.११.१.६.१ आपो वा इदमग्रे सलिलमेवास।
- ऋ.वे. ६.५०.७

  ओमानापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शंयो।

  यूयं हिष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्री।।
- य.वे.४.२ आपो अस्मान्मातर: शुन्धन्तु।।

- अ.वे.१.६.१

  शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

  शं योरभि स्रवन्तु नः।।

- ऋ.वे.५.८३.४

  प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः।

  इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति।।

- महा. शान्तिपर्व

  अद्भिः सर्वाणि भूतानि जीवन्ति प्रभवन्ति च।

  तस्मात् सर्वेषु दानेषु तयोदानं विशिष्यते।।

- महा. अश्वमेधिकपर्व

  पानीयं परमं लोके जीवानां जीवनं स्मृतम्।।

  पानीयस्य प्रदानेन तृप्तिर्भवति पाण्डव।

  पानीयस्य गुणा दिव्याः परलोके गुणावहाः।।

- ऋ.वे.१०.९.२.

  यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।

  उशतीरिव मातरः।।

- ऋ.वे.१.२३.१९. अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।।

- अ.वे.१.५.३.

  तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।

  आपो जनयथा च नः।।

- अ.वे.१.६.३.

आप: पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम।

ज्योक् च सूर्यं दृशे।।

- ऋ.वे.१.९.१.

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।

महे रणाय चक्षसे।।

- ऋ.वे.१०.९.६.

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा।

अग्निं च विश्वशंभुवम्।।

- ऋ.वे.१.२३.२२.

इदमाप: प्र वं हत यत्किं च दुरितं मयि।

यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्।।

- य.वे.४.१२.

श्वात्रा: पीता भवत यूयमापो अस्माकमन्तरुदो सुशेवा:।

ताऽअस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागस: स्वदन्तु देवीरमृता

ऋतावृध:।।

- अ.वे.१२.१.३०. शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु।।

- ऋ.वे.६.४८.२२.

सकृद्ध द्यौरजायत सकृद्भूमिरजायत।

पृश्न्या दुग्धं सकृत्पयस्तदन्यो नानु जायते।।

- ऋ.वे.१.२३.१९.

अप्स्वडन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये देवा।

भक्त वाजिना:।।

- ऋ.वे.७.४९.२.

  या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा या: स्वंयंजा:।

  समुद्रार्था या: शुचय: पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

- य.वे.६.२२ मापो मौषधीर्हिंसी।।

- अ.वे.१.६.४ शिवा न: सन्तु वार्षिकी:।।

- ई.उ.

  ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

  तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम्।।

सहायक-ग्रन्थ

- Jha, D. D. (1997). ऋग्वेद संहिता (हिन्दी व्याख्या सहित). चौखम्भा संस्कृत प्रकाशन।
- Sharma, R. (1999). कृष्ण यजुर्वेद संहिता (हिन्दी टीका सहित). चौखम्भा ओरियंटलिया।
- Shastri, V. S. (2003). अथर्ववेद संहिता (हिन्दी भाष्य सहित). चौखम्भा विद्याभवन।
- Dwivedi, R. (2010). ईशावास्योपनिषद् (हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या सहित). चौखम्भा प्रकाशन।
- Gita Press. (2009). महाभारत: शान्तिपर्व (हिन्दी भाष्य सहित). गीता प्रेस।
- Gita Press. (2010). महाभारत: अश्वमेधिक पर्व (हिन्दी भाष्य सहित). गीता प्रेस।